

---

Atmarakshakaram Shri Parshvanatha Vajrapanjarastotram

---

आत्मरक्षाकरं श्रीवज्रपञ्जरस्तोत्रम्

---

Document Information

---

Text title : pArshvanAthavajrapanjarastotram

File name : pArshvanAthavajrapanjarastotram.itx

Category : deities\_misc, panjara, jaina

Location : doc\_deities\_misc

Transliterated by : DPD

Proofread by : DPD

Description/comments : pArshvapadmAvatI mahApUjana vidhi

Latest update : June 13, 2020

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 13, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

## आत्मरक्षाकरं श्रीवज्रपञ्जरस्तोत्रम्



ॐ परमेष्ठिनमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।  
आत्मरक्षाकरं वज्रपञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥  
ॐ नमो अरिहन्ताणं शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।  
ॐ नमो सब्वसिधाणं मुखे मुखपटं वरम् ॥ २ ॥  
ॐ नमो आयरियाणं अङ्गरक्षाऽतिशायिनी ।  
ॐ नमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयो दृढम् ॥ ३ ॥  
ॐ नमो लोए सब्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे ।  
एसो पञ्च नमुक्कारो शिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥  
सब्वपावप्यणासणो वप्रो वज्रमयो बहिः ।  
मङ्गलाणं च सब्वेसिं खादिराङ्गारखातिका ॥ ५ ॥  
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं पढमं हवै मङ्गलम् ।  
वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥  
महाप्रभावा रक्षेयं क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।  
परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः । १७ ॥  
यथचैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।  
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

(Gujarati

आ वज्रपञ्जर स्तोत्र चेष्टापूर्वक बोली-आत्मरक्षा करवी.  
पछी श्री पार्श्वप्रभुनुं हृदयमां चितवन  
करतां पूजन शरू करवुं. तेमां सौथी प्रथम एक पुरूष  
क्षेत्रपालनी अनुज्ञा स्वरूप नीचेना मन्त्रथी  
क्षेत्रपालनुं पूजन करे.)

ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः अत्रस्थक्षेत्रपालाय स्वाहा ॥

यन्त्र उपर केशर, पुष्प पूजा, माण्डला उपर लीलुं नारियेल,  
चमेलीनुं तेल, केशर, जासुदनुं कूल.

॥ अथ आह्वानादिः ॥

आह्वानः

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्री पार्श्वनाथ शासनदेवि भगवति पद्मावति !  
अत्र अवतर अवतर संवौषट् । आह्वान मुद्राए आह्वान करवुं.

स्थापनाः

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्री पार्श्वनाथ शासनदेवि भगवति पद्मावति !  
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापन मुद्राए स्थापन करवुं.

सन्निधानः

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्री पार्श्वनाथ शासनदेवि भगवति पद्मावति !  
मम सन्निहिता भव भव, वषट् ।  
सन्निधान-मुद्राए सन्निधान करवुं.

सन्निरोधः

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्री पार्श्वनाथ शासनदेवि भगवति पद्मावति !  
पूजां यावदत्रैव स्थातव्यम् । सन्निरोध-मुद्राए सन्निरोध करवो.

अवगुण्ठनः


ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्री पार्श्वनाथ शासनदेवि भगवति पद्मावति !  
परेषामदृश्या भव भव, फट् ।  
अवगुण्ठन-मुद्राए अवगुण्ठन करवुं.

अञ्जलिः


ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्री वर्शनाथ शासनदेवि भगवति पद्मावति !  
इमां पूजां प्रतीच्छत प्रतीच्छत ।  
पूजनमुद्रा (अञ्जलि) करी अर्पण करवुं.

इति आत्मरक्षाकरं श्रीपार्श्वनाथवज्रपञ्जरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by DPD

——  
*Atmarakshakaram Shri Parshvanatha Vajrapanjarastotram*

pdf was typeset on June 13, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

